Vol 4 Issue 8 Feb 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

# Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

**Welcome to GRT**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org**

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

# संत मलूकदास के काव्य में दार्शनिक चिंतन

*राजविन्द्र W/o श्री रणजीत सिंह*

***सारांश*** : संत मलूकदास अपने काव्य में ब्रह्म को अतुलनीय और सर्वशक्तिमान मानते हैं। ब्रह्म ही परम सत्य है। वह सर्वव्यापक एवं सृष्टि रचयिता है। प्रस्तुत अध्याय में सर्वप्रथम ब्रह्म और माया के स्वरूप को स्पष्ट किया जाएगा। तदोपरान्त ब्रह्म की सर्वव्यापकता तथा जीव और ब्रह्म में भेद को विवेचित करने का प्रयास किया जाएगा। अन्त में सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रासंगिकता की दृष्टि से इस बात पर विचार किया जाएगा कि मलूकदास के काव्य में जीव और ब्रह्म संबंध की क्या प्रासंगिकता है।

***प्रस्तावना :***

संतों के सिध्दांत वस्तुतः स्वानुभूति पर आधारित होते हैं। उनका अपना अनुभव ही उनके सिध्दान्तों का कारण बनता है। अनुभूति के सूक्ष्म साँचे में ढलकर ही उनके निजी विचार सिध्दान्तों के रूप में परिणत होते हैं। इसके लिए उन्हें कहीं इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता। वे तो मन ही मन स्वयं ही उन्हें अनुभूत होते हैं। धर्म और परंपरा से विद्रोह करने वाले विचारों और विचारकों के साथ यह सदैव होता आया है कि मलूकदास से लेकर, ऐसे अनेक नाम हैं जिनको या जिनकी प्रासंगिकता को विद्वान ठीक से नहीं समझ सके हैं।

संत कवि मलूकदास ने भी अन्य संतों की भाँति ही सीधे-सादे शब्दों में परब्रह्म की सत्ता एवं पूंजी सौंप दी है। धर्म को शास्त्रों से निकालकर जीवन-प्रवाह के साथ जोड़ दिया। पाखंड, आडम्बर एवं भेद-भाव से ग्रस्त व्यवहारिक जीवन की बाधाओं को, अपनी सर्वग्राही, मानवी, सर्वसुलभ अध्यात्म-अनुभूति की प्रवाही चेतना से, उखाड़ पफेंका है। वह सरल दार्शनिक हैं क्योंकि मूल प्रकृति से, मौलिक रूप में जुड़े हुए हैं। मलूक का परब्रह्म एक है तथा सबके लिए सहज सुलभ है। वह नाम, रूप, जाति, वर्ण से परे है। शब्दरूप है। संत मलूकदास का मत है-

शब्द अनाहत होत जहां ते, तहां ब्रह्म कर बासा।
गगन मंडल में करत किलोलें, परम ज्योति परगासा।[१]

जहाँ अनहत् नाद व्याप्त है, वहाँ ब्रह्म का निवास है। संपूर्ण गगन मंडल में उसी की लीला व्याप्त है। वही परम ज्योति चैतन्य प्रकाश बन सर्वत्रा विद्यमान है। निर्गुण पंथ के संत मलूकदास के दार्शनिक एवं साधना संबंधी विचार कबीर, दादू, नानक आदि की भाँति लोक-परंपरा से ही गृहीत हैं। उनकी वाणी में ब्रह्म को समूचे ब्रह्मांड का कर्ता माना है। वह कर्ता इस सृष्टि में व्याप्त भी है और पृथक् भी है। वह परात्पर त्तव है। निरंजन, निराकार भी है और मनुष्य में तथा ब्रह्मांड में कुछ भिन्नता भी नहीं है। जो ब्रह्मांड में है, वह पिण्ड में भी है। वही जीव-जीव और - चित्त में विद्यमान है-

बाहर भीतर ज्यों आकासा। रवि ज्यों दसहु दिस परगासा।।
जो अदृश्य दृष्टा है होई। लखै सो आपु लखावै सोई।
सोई जगपति पालनहारा। सोई उतपति करत संहारा।।[२]

अर्थात् वह परमात्मा हर जीव में, मन में एवं चित्त में विद्यमान है। वही जीभ में रस की पहचान कराने में रस रूप में, वाणी में स्वर रूप में तथा सभी अंगों में स्पर्श-सुख का भान कराने वाला है। वही हर स्थिति में विद्यमान रहता है। बाहर-भीतर, जैसे आकाश व्याप्त है, उसी प्रकार परमात्मा भी व्याप्त है। वह अदृश्य होकर भी दृष्टा है। हमें सभी आकारों-रूपों में वही दीखता है, वही सबका पालन करता है। उत्पत्ति तथा संहार भी वही करता है। ऐसा सर्व-व्याप्त,

सर्व-व्यापक, निर्गुण-निराकार-निरंजन ब्रह्म ही साकार-सगुण रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है।

मलूकदास का कहना है, अपना-सा दुख सबका जानै ताहि मिलै अविनाशी। हृदय की कोमलता मनुष्य होने की शर्त है। इस सहज कोमलता या संवेदना को खो देने से मनुष्य अपने मनुष्य होने को झुठला रहा है। अपनी मनुष्यता को सिध्द( करने के लिए उसे अपनी संवेदनाओं को मनुष्यों तक ही नहीं, मनुष्येतर प्राणियों-पशु-पक्षी-पौधा और पाहन ;पत्थरद्ध तक विकसित करना चाहिए। ऐसा करना कोई अतिरिक्त कार्य नहीं। एहसान नहीं। अपने जीव और योनि-धर्म को सि सार्थक करने के लिए अनिवार्य है। यही भक्ति भी है। इससे इतर कोई भक्ति नहीं।

भूखेहिं टूक प्यासेहिं पानी।
एहि भगति हरि के मन मानी। [२]

संत मलूकदास के शब्दों में भक्ति की उक्त सरल परिभाषा यदि समझ में नहीं आती किसी को और भक्ति के नाम पर कई तरह के मजहबी-सांप्रदायिक ;सम्प्रदायवादीद्ध प्रपंच या आडम्बर को ही भक्ति मानने के आग्रह मन में समाए हुए हैं तो यह सबसे बड़ी विडम्बना ही है। आज अपने सहज मनुष्य धर्म को छोड़कर 'धर्म' और 'परमात्मा' की बड़ी-बड़ी बातें मूर्खतापूर्ण भटकन के सिवा और कुछ नहीं। आज विभिन्न संप्रदायों के मुल्ला-पंडित-पादरी जो मानक के लिए 'धर्म' एवं 'परमात्मा' के नाम पर पीड़ाएँ बो रहे हैं उनके लिए मलूकदास के ये शब्द सही मार्ग दिखाने वाले हैं कि वही पीर या संत है, जो दूसरों की पीड़ा को जानता है और दूर करता है।

यह जागरण मनुष्य को परमात्मा से सम्बल ( कर देता है। योग इसे ही कहा जाता है। आत्मचेतना का परमात्म चेतना से मिलना। इस मिलन का रास्ता परमात्मा की इस रचना- संसार के भीतर से ही होकर जाता है। इस जगती को प्रेम करना ही परमात्म-प्रेम है। इस जगती की पीड़ाओं से, वेदनाओं से भरना- अपने कृत्यों से, वचनों से धरती के जीवन में दुःखों-कष्टों को बढ़ाना ही कापिफरपन है, बे-पीर होना है। यह मनुष्य की अधमता-पशुता की स्थिति है। अन्यथा इस आत्मिक-आध्यात्मिक जागरण में मनुष्य स्वयं परमात्मा ही हो जाता है। भारत में धर्म के दस लक्षण माने गए हैं- धैर्य, क्षमा, सहिष्णुता, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, सम्यक ज्ञान, आत्मज्ञान, सत्य और अक्रोध। इनके 'अधीन व्यक्ति' अध्यात्म की आँखें पा जाता है। आज कितने धर्म-सम्प्रदाय हैं जो स्वयं के लिए 'धर्म' शब्द का प्रयोग तो करते हैं पर उक्त लक्षणों पर पूर्णतः विश्वास नहीं करते। खरे नहीं उतरते, आचरण में नहीं लाते।

महान संत कबीर, नानक, दादू, रैदास की श्रेणी के संत हैं- मलूकदास। वह भी अध्यात्म के मर्म को विभिन्न प्रकार से अपनी वाणी में व्यक्त करते-संवारते हैं। उनकी दृष्टि में मात्रा मूरत को पूजना, आत्मानुभूति के स्पफरण के बिना, मात्रा नाम रटते रहना, आत्मा को मारने जैसा है। यह कर्म कोटि कसाइयों के जैसा है-

मूरत पूजैं बहुत मति, नित नाम पुकारैं।
कोटि कसाई तुल्य हैं, जो आतम मारैं।। [४]

आत्मीयता-संवेदनशीलता के बिना मात्रा नाम रटना कसाईपन है। देह की हत्या तो हत्या होती ही है, आत्महीन होकर आचरण करना- आत्मा को मारना भी हत्या-कर्म है। आत्मानुभूतिहीन हो परमात्मा का नाम पुकारना भी आत्मा को मारने जैसा कसाई-कर्म है। इससे भी आगे सच्ची पूजा परदुःखकातरता है। वही सच्चा भक्त है जो दूसरों के दुःख में दुखी होता है। पराए दुःख को अपना दुःख मानता है। मलूक कहते हैं ऐसा भक्त ही राम को प्यारा है। उसे प्रभु एक पल के लिए भी अपनी आँखों से ओझल नहीं करते-

परदुख दुखिया भक्त है, सो रामहिं प्यारा।
एक पलक प्रभु आपतें, नहिं राखैं न्यारा।। [५]

क्योंकि परदुखकातर होना, आत्मानुभूति से भरा होना है। राममय होना है और मनुष्य करुणा के कारण ही इस धरती का सर्वश्रेष्ठ जीव है। आत्म और आत्म-ज्ञान के कारण ही वह सबसे उत्तम है। पृथक है। सब जीवों के हित का दायित्व उस पर आता है। इस दायित्व का निर्वाह ही धर्म का आग्रह है। धर्म के मर्म- करुणा भाव से रहित हो जाना ही अधर्म है।

अन्य संतों की भाँति मलूक भी हृदय की शुध्दता, पवित्रता पर बल देते हैं और साथ ही प्रेम-नेम पर भी बल देते हैं। जीव मात्रा से प्रेम करनाऋ प्रेम से भरे रहना मनुष्य का सहज कर्तव्य है। यह सारी सृष्टि अकारण नहीं। सकारण है। तो इसका कोई नियंता भी है। यही सृष्टिकर्ता पुरुष और प्रकृति की अवधारणा में विश्वास के आधार पर अलख पुरुष का उल्लेख है। जो दिखाई नहीं पड़ता- चर्म-चक्षुओं से- बाहरी आँखों से- वह अलख है। उसे आत्मा की आँखों से लखा अर्थात् देखा जा सकता है। यहीं यह भी तय बात है कि मनुष्य उस अलख को तभी देखने में सपफल हो पाता है, जब वह अपने 'मैं' को जीत लेता है। अपने अहंकार को जीत लेने के उपरान्त ही अलख को देखा जा सकता है और अहंकार को

जीतने के लिए प्रेम का जगना जरूरी है। सृष्टि में जो कुछ भी है, वह परमात्मा की रचना है। उसे सुरक्षित रखना, संरक्षित करना मनुष्य का धर्म है- यही नेम है- नियम-विधान है। प्रेम और नेम के माध्यम से अहंकार को जीतने से अंतःचक्षु खुलते हैं। हर कहीं व्याप्त ईश्वर दीखने लगता है। किन्तु लो लोग स्वयं को इस योग्य नहीं बना पाते- प्रेम-नेम नहीं करते, मैं-पन ;अहंकारद्ध को नहीं जीतते उन्हें अलख भी दिखाई नहीं देता। मलूक कहते हैं ऐसे नयनों में 'छार परो'- अर्थात् राख पड़े। अर्थात् ऐसे जीवन का और आँखों का होना, न होने के बराबर है। इसी तरह जीना और मरना का उल्लेख करते हैं मलूक-

मुवा सकल जग देखिया, मैं तो जियत न देखा कोय, हो।
राम दुवारे जो मरे, वाका बहुरि न मरना होय, हो।।

सिर्फ चलते पिफरते, सांस लेते, व्यवहार करते लोग मिट्टी के लोंदे के समान हैं, यदि उनमें आत्म और आत्मानुभूति जाग्रत नहीं होती। बल्कि वे मरे समान हैं। ऐसा सारा का सारा संसार मरा हुआ लगता है मलूक को। मरे हुए, मरे हुओं को ब्याह रहे हैं। मलूक ऐसे लोगों को चेतने को कहते हैं। अनुभूतिपूर्ण जीवन जीने को कहते हैं। परमात्मा की अनुभूति से प्रेम से भर जाने पर हर कहीं प्रभु विद्यमान दिखेंगे। हर श्वास में, हर शाख में, हर पेड़ में, हर पौधे में, पशु-पक्षी, पदी-पहाड़ तक में 'उसी का विस्तार दिखाई' देगा। इस तरह मलूक मरे हुओं में प्राण पँफूककर उन्हें सच्चे अर्थों में जीना सिखाते हैं और अंधों को आँखें देकर उन्हें देखना सिखाते हैं।

अतः मलूक 'ब्रह्म' को कई संज्ञाओं से संबोधित करते हैं- निरंकार, अविनाशी, साहब, अल्लाह, परमेश्वर, जोतिसरूप, परमानंद, कन्हाई, सिरजनहार आदि। इन संज्ञाओं के अर्थ उस ब्रह्म के क्षेत्रा-विस्तार और गुण-धर्म भी हैं। अतः ब्रह्म और उसकी सृष्टि में कहीं भिन्नता नहीं देखते मलूक। वह सबके हो जाते हैं और सब उनके हो जाते हैं। स्रष्टा और सृष्टि दोनों प्रिय भी और हितकर भी।

---

१.बलदेव वंशी ;संपा.द्ध, सन्त मलूक ग्रन्थावली, पृ. ५७
२.वही, पृ. ३८
३.बलदेव वंशी ;संपा.द्ध, सन्त मलूक ग्रन्थावली, पृ. ७६
४.बलदेव वंशी ;संपा.द्ध, सन्त मलूक ग्रन्थावली, पृ. ३१
५.बलदेव वंशी ;संपा.द्ध, सन्त मलूक ग्रन्थावली, पृ. ३५
६.वही, पृ. ४२

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org